यह है भी अजब तमाशा।जैसे जिस प्रकार से बच्चे अजब तमाशा समझते हैं ऐसे और कोई की बुद्धि में नहीं है।यह दुनियां भी एक कलियुगी तमाशा है।यह है बेहद का तमाशा जो लाडले बच्चों की बुद्धि में है।एमआब्जेक्ट तो बुद्धि में है।अगर ल.ना. के मंदिर में जाते हैं तो भी महिमा वो ही करते हैं जो कृष्ण के आगे करते हैं।सर्वगुण सम्पन्न.....सिर्फ मंदिर अलग कर दिया हैं।यह नहीं जानते राधा कृष्ण ही फिर ल.ना. बने हैं।कहते हैं कृष्ण द्वापर में राम त्रेता में बाकी ल.ना. को सतयुग में दिखाते हैं।दुनियां तो कुछ समझने का खयाल भी नहीं करती।बुद्धि में नहीं आता यह कब आये थे फिर कहां गये?क्या कोई से राज्य हराया?तो यह तमाशा तुम बच्चों की बुद्धि में अच्छी रीति बैठा है।इसको कुदरत नहीं, तमाशा कहेंगे।कुदरत यह है कि इतनी छोटी स्टार कितना उंचा पार्ट भरा हुआ है और खेल है अजब तमाशा।बुद्धि में आना चाहिए ना।हम नाटक करते हैं ;परंतु इनके आदि, मध्य, अंत को जानते हैं।सिर्फ नाटक कहने से फायदा थोड़े ही होता है।हम पार्ट बजाते हैं तो एक्टर होकर ड्रामा के आदि, मध्य, अंत को जानना चाहिए ना।यह तो बेहद का ड्रामा है।क्रिश्चियन लोग यह थोड़े ही जानते होंगे क्राइस्ट .....कितने दिनों बाद आवेंगे।तुम बच्चों को सब मालूम है।मनुष्य सिर्फ कह देते हैं परमपिता परमात्मा ज्ञान सागर है।रचयिता है ;परंतु कैसे क्रियेट करते हैं यह नहीं जानते।तुमको तो सब मालूम है।बाप रचयिता भी है फिर पालना भी कराते हैं ,विनाश भी कराते हैं।तो तुम सब जानते हो।भिन्न2 सैन्टर्स पर जो भी सभी ब्रह्माकुमार कुमारियां ,ब्राह्मण ब्राह्मणियां हैं उन सबको हक है बाप को पत्र लिखने का।बाबा तो कहते हैं बच्चे पत्र नहीं लिखते हैं।हर एक को समाचार देना चाहिए।कोई2 सैंटर्स में ब्राह्मणी ऐसी केक हेड है जो कहती है हमारे हुक्म बिगर पत्र ना भेजो।ब्राह्मणियां मेले करती हैं जो छिपाना चाहती हैं।बच्चे खुश खैरियाफत तो भले लिखें।समाचार भी लिखें।कई ब्राह्मणियां अपने को मिया मिट्ठू समझती हैं।यह समझती नहीं हम भूलें करती हैं।पोलाइट होकर नहीं चलती हूँ तो जिज्ञासु रूठ पड़ते हैं।आना छोड़ देते हैं।कहती हैं हमारे बिगर पूछे बाबा को पत्र ना लिखो।इसलिए बाबा कहते हैं सब बच्चों को हक है बाप को पत्र लिखना।सब समाचार देना।ब्राह्मणी ठीक पढ़ाती है वा नवाबी दिखाती है ,कोई डिससर्विस करती है तो समाचार देने से उसको सावधानी मिलेगी।अपना अकर्तव्य कार्य छिपाने से विकर्म को पड़ेंगे।बच्चे हर प्रकार का समाचार दे सकते हैं।टीचर का भी समाचार दे सकते हैं।अज्ञानकाल में भी टीचर की रिपोर्ट प्रिंसीपल को करते थे कि इनको बदली करो।यहां कभी बाबा पास ब्राह्मणी की रिपोर्ट आती है तो बहुतों को बदली भी कर देते हैं या तो फिर यहां मंगाय बिठा देते हैं।यहां क्या नुकसान करेंगे।तो सब बच्चे समाचार दे सकते हैं।कोई में खामी हो वो अगर महारानी बन बैठे ,खटिया पर बैठे चाय आदि मांगे तो रिपोर्ट करो।अगर यहां जास्ती फुरसतों में मौज में रहेगी तो वहां पर.....बनेगी।माया है ना।नशे में ले जाती है।यहां किसी की साक की जाती है तो भी नशा चढ़ जाता है।सब बच्चों को हक है समाचार देने।सेंटर चलाने वाली ब्राह्मणी से कई बच्चे भी होशियार होते हैं।वो जरूर समाचार देंगे।नहीं तो वो हिल जाती है।फिर डिससर्विस हो जाती है।बाप कहते हैं मूल बात है याद की।समझाने में भी नशा चढ़ता है।..... हठयोगियों को राजयोग का बिल्कुल पता नहीं है।गीता का भगवान कौन था?यह भी तुम ब्राह्मणों को पता है।और किसी को पता नहीं है।गीता में है भगवानोवाच्य कि देह के सब धर्मों को त्याग अपने को आत्मा समझो।तो पवित्र बन निर्वाणधाम में चले जावेंगे।इस श्रीमत के सिवाय कब भी कोई पावन बन मुक्तिधाम जा नहीं सकते।ना कोई गया है।सतयुग के पहले नम्बर वाले ही यहां हैं।सबसे बड़ा मर्तबा इन ल.ना. का है।श्रीलक्ष्मी हर होलीनेस श्रीनारायणय हिज होलीनेस।यहां कोई हर होलीनेस हिजहोलीनेस हो नहीं सकते।कोई को सम्पूर्ण निर्विकारी कह नहीं सकते ;परंतु यह लोग तो अपने को श्री2 108 जगतगुरू कहलाते रहते हैं।इसलिए कहा जाता है अंधेरी नगरी (चौपट) राजा.....;परंतु अपने (को चौपट) ,ईडियट को समझते नहीं हैं।शिवबाबा कहते हैं सब ईडियट्स हैं।बाप को भी नहीं जानते, रचना की आदि ,मध्य, अंत को भी नहीं जानते हैं।ना माना नास्तिक, ईडियट निडर होकर यह लिख सकते हो।ओम।